शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली

Directorate of Education, GNCT of Delhi

Suggestive Answers
Term-2 (Session-2021-2022)
Subject - Political Science
Class- 11

प्र.सं. Q.N.	अनुभाग- ए / Section-A	अंक Marks
1.	**गांधी जी का स्वराज से क्या आशय था?**	2
उत्तर	स्वराज का आशय अपने ऊपर अपना राज है। गांधी जी ने 'हिंद स्वराज' में इसके विषय में लिखा है। गांधी जी के अनुसार- "जब हम स्वयं पर शासन करना सीखते हैं तभी स्वराज है"। स्वराज केवल स्वतंत्रता ही नहीं बल्कि ऐसी संस्थाओं से मुक्ति भी है, जो मनुष्य को उसी मनुष्यता से वंचित करती है। गांधी जी का मानना था कि 'स्वराज' के फलस्वरूप होने वाले बदलाव न्याय के सिद्धांत से निर्देशित होकर व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों तरह कि संभावनाओं को अवमुक्त करेंगे।	
	अथवा	
	हानि सिद्धांत का संक्षिप्त वर्णन कीजिये।	
उत्तर	हानि सिद्धांत का अर्थ है- किसी के कार्य करने की स्वतंत्रता में व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से हस्तक्षेप करने का इकलौता लक्ष्य आत्म-रक्षा है। सभ्य समाज के किसी सदस्य की इच्छा के खिलाफ शक्ति के औचित्यपूर्ण प्रयोग का एकमात्र उद्देश्य किसी अन्य को हानि से बचाना हो सकता है।	

2. उत्तर	**लोक सभा की किन्हीं दो विशेष शक्तियों का उल्लेख कीजिए।** **i. धन विधेयक केवल लोक सभा में ही पेश किए जा सकते हैं और वही उसे संशोधित या अस्वीकृत कर सकती है।** **ii. मंत्रिपरिषद केवल लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होती है।**	2
3. उत्तर	**जनहित याचिका किस तरह गरीबों की मदद कर सकती है? अपने विचार तर्क सहित लिखिए।** **परीक्षार्थी अपने विचार स्वविवेक से लिखेंगे।**	2
4. उत्तर	**इमैनुएल कांट के अनुसार न्याय क्या है?** **इमैनुएल कांट के अनुसार हर मनुष्य की गरिमा होती है। अगर सभी व्यक्तियों की गरिमा स्वीकृत है, तो उनमें से हर एक का प्राप्य यह होगा कि उन्हें अपनी प्रतिभा के विकास और लक्ष्य की पूर्ति के लिए अवसर प्राप्त हो। न्याय के लिए जरूरी है कि हम तमाम व्यक्तियों को समुचित और बराबर की अहमियत दें।**	2
5. उत्तर	**लोकसभा का सदस्य होने के लिए एक प्रत्याशी में किन योग्यताओं का होना आवश्यक है? किन्हीं चार योग्यताओं को लिखिए।** 1. **वह भारत का नागरिक हो।** 2. **उसकी आयु 25 वर्ष या उससे अधिक हो।** 3. **वह किसी लाभ के पद पर ना हो।** 4. **वह पागल या दिवालिया ना हो।** 5. **अदालत द्वारा अपराधी घोषित नहीं किया गया हो।** **(कोई चार)**	4x.5 =2

6. उत्तर	**समाजवाद के मुख्य सरोकारों का वर्णन कीजिए।** **समाजवाद असमानताओं के जवाब में उपजे कुछ राजनीतिक विचारों का समूह है। ये खासकर वे असमानताएँ थीं, जो औद्योगिक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था से पैदा हुई और उसमें बाद तक बनी रहीं। समाजवाद का मुख्य सरोकार वर्तमान असमानताओं को न्यूनतम करना और संसाधनों का न्यायपूर्ण बँटबारा है। हालाँकि समाजवाद के पक्षधर पूरी तरह से बाज़ार के खिलाफ तो नहीं होते, लेकिन वे शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा जैसे आधारभूत क्षेत्रों में सरकारी नियमन, नियोजन और नियंत्रण का समर्थन करते हैं।**	2
7. उत्तर	**संविधान के अनुच्छेद 74 (1) का संबंध किस से है? लिखिए।** **राष्ट्रपति को सलाह देने के लिए एक मंत्रिपरिषद होगी जिसका प्रधान, प्रधानमंत्री होगा। राष्ट्रपति अपने कृत्यों का प्रयोग करने में ऐसी सलाह के अनुसार कार्य करेगा।** **परंतु, राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद से ऐसी सलाह पर पुनर्विचार करने को कह सकता है और राष्ट्रपति ऐसे पुनर्विचार के पश्चात दी गयी सलाह के अनुसार ही कार्य करेगा।**	2
8. उत्तर	**यदि एक अध्यापक कक्षा के कमजोर छात्रों के मनोबल को उठाने के लिए कुछ अतिरिक्त अंक दे देते हैं तो इसमें न्याय का कौन सा सिद्धांत काम करता है। क्या आप इसे न्यायसंगत मानेंगें? सतर्क उत्तर लिखिए।** **परीक्षार्थी स्वविवेक से उत्तर देंगे।**	2
	अनुभाग-बी/Section-B	
9.	**न्यायपालिका की स्वतंत्रता को संविधान द्वारा किस प्रकार सुनिश्चित किया गया है? ऐसे किन्हीं चार उपायों को लिखिए।**	4x1=4

उत्तर	**भारतीय संविधान में निम्नलिखित उपायों द्वारा न्यायपालिका की स्वतंत्रता को सुनिश्चित किया गया है-** 1. **दलगत राजनीति की भूमिका को दूर रखने के लिए न्यायाधीशों की नियुक्तियों के मामले में विधायिका को सम्मिलित नहीं किया गया है।** 2. **न्यायाधीश के रूप में नियुक्त होने के लिए किसी व्यक्ति को वकालत का अनुभव होना चाहिए।** 3. **न्यायाधीशों का कार्यकाल निश्चित होता है।** 4. **न्यायाधीशों के वेतन संचित निधि से दिये जाते हैं।** 5. **न्यायाधीशों के रिटायर होने के बाद उनके द्वारा वकालत करने पर प्रतिबंध है।** **(कोई चार)**	
10. **उत्तर**	**अवसर की समानता से आप क्या समझते हैं ?** **अवसर की समानता से आशय है कि समाज में तमाम लोगों को समान महत्व देना। माना जाता है कि मनुष्य होने के नाते सभी व्यक्तियों में कुछ समान चारित्रिक विशेषताएँ होती हैं। इसलिए वे समान अधिकार और समान बर्ताव के अधिकारी हैं। आज अधिकांश उदारवादी जनतंत्रों में कुछ महत्वपूर्ण अधिकार दिए गए हैं। इनमें जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति के अधिकार जैसे नागरिक अधिकार शामिल हैं। इसमें समाज के अन्य सदस्यों के साथ समान अवसरों के उपभोग करने सामाजिक अधिकार और मताधिकार जैसे राजनीतिक अधिकार भी शामिल हैं। समान अधिकारों के अलावा समकक्षों के साथ बर्ताव के सिद्धांत के लिए जरूरी है, कि लोगों के साथ वर्ग, जाति , नस्ल या लिंग के आधार पर भेदभाव न किया जाए। उन्हें उनके काम और कार्यकलापों के आधार पर जाँचा जाना**	4

	चाहिए।	
11. उत्तर	**भारत के दिए गए मानचित्र में ए, बी, सी और डी से ऐसे चार राज्य दर्शाए गए हैं जहां द्विसदनीय विधानमंडल है। इनको पहचान कर अपनी उत्तर-पुस्तिका में निम्नलिखित तालिका के रूप में लिखिए।** **क्रम संख्या** | **संबंधित अक्षर** | **राज्य का नाम** i | A | **उत्तर प्रदेश** ii | B | **कर्नाटक** iii | C | **महाराष्ट्र** iv | D | **तेलंगाना**	4x1=4
	अनुभाग-सी/Section-C	
12. उत्तर	**नकारात्मक और सकारात्मक स्वतंत्रता में मुख्य अंतर लिखिए।** 1) **नकारात्मक स्वतंत्रता में किसी बाहरी सत्ता का हस्तक्षेप नहीं होता है। यह उस क्षेत्र को पहचानने और बचाने का प्रयास करती है, जिसमें व्यक्ति अनुलंघनीय हो। जबकि सकारात्मक स्वतंत्रता के पक्षधरों का मानना है की व्यक्ति केवल समाज में ही स्वतंत्र हो सकता है, समाज से बाहर नहीं और इसलिए वह इस समाज को ऐसा बनाने का प्रयास करते हैं, जो व्यक्ति के विकास का रास्ता साफ करें। सकारात्मक स्वतन्त्रता के अनुसार राज्य का कार्य व्यक्ति के विकास में आने वाली बाधाओं को दूर करना है।**	6

	2) **नकारात्मक स्वतंत्रता का तर्क यह स्पष्ट करता है की व्यक्ति 'क्या करने से मुक्त' है। इससे उलट सकारात्मक स्वतंत्रता के तर्क 'कुछ करने की स्वतंत्रता' के विचार की व्याख्या से जुड़े हैं।** 3) **नकारात्मक स्वतन्त्रता आर्थिक क्षेत्र में अहस्तक्षेपकारी राज्य का समर्थक है जबकि सकारात्मक स्वतन्त्रता व्यक्ति के पूर्ण विकास के लिए राज्य को आवश्यक मानती है।** 4) **नकारात्मक स्वतन्त्रता के अनुसार राज्य का कार्यक्षत्र सीमित है। सकारात्मक स्वतन्त्रता राज्य को कल्याणकारी भूमिका के रूप में देखती है।** 5) **नकारात्मक स्वतन्त्रता के अनुसार प्रतिबंध एक बुराई है। परंतु सकारात्मक स्वतन्त्रता ऐसा नहीं मानती है।** **अथवा** **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर उचित प्रतिबंध होना चाहिए या नहीं। इस विषय में अपने विचारों को तर्क सहित अभिव्यक्त कीजिये।**	
उत्तर	**परीक्षार्थी स्वविवेक से उत्तर देंगे।**	6
13. **उत्तर**	**राष्ट्रपति के किन्हीं तीन विशेषाधिकारों का वर्णन कीजिए।** 1) **राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद की सलाह को लौटा सकता है और उसे अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने के लिए कह सकता है। जब राष्ट्रपति को ऐसा लगता है कि सलाहमें कुछ गलती है या कानूनी रूप से कुछ कमियाँ हैं या फैसला देश के हित में नहीं है, तो वह मंत्रिपरिषद से अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने के लिए कह सकता है।**	3x2=6

	2) दूसरे, राष्ट्रपति के पास वीटो की शक्ति (निषेधाधिकार) होती है जिससे वह संसद द्वारा पारित विधेयकों (धन विधेयकों को छोड़ कर) को स्वीकृति देने में विलंब कर सकता है या स्वीकृति देने से मना कर सकता है। 3) तीसरे प्रकार का विशेषाधिकार राजनीतिक परिस्थितियों के कारण पैदा होता है। औपचारिक रूप से राष्ट्रपति प्रधानमंत्री की नियुक्ति करता है। सामान्यतः अपनी संसदीय व्यवस्था में लोकसभा के बहुमत दल के नेता को प्रधानमंत्री के रूप में नियुक्त किया जाता है। लेकिन यदि चुनाव के बाद किसी भी नेता को लोकसभा में बहुमत प्राप्त न हो तो राष्ट्रपति को अपने विशेषाधिकार का प्रयोग कर यह निर्णय लेना होता है कि किसे बहुमत का समर्थन प्राप्त है या कौन सरकार बना सकता है और सरकार चला सकता है। **अथवा** **मंत्रिपरिषद के प्रधान के रूप में प्रधानमंत्री की भूमिका का उल्लेख कीजिए।**	
उत्तर	मंत्रिपरिषद के प्रधान के रूप में प्रधानमंत्री की निम्नलिखित भूमिकाएँ है: 1) मंत्रिपरिषद का निर्माण करना। 2) विभागों का बँटबारा करना। 3) मंत्रिपरिषद का पुर्नगठन करना। 4) मंत्रिमंडल का अध्यक्ष होना। 5) राष्ट्रपति व मंत्रिमंडल के बीच की कड़ी होना। 6) सदन का नेता होना। 7) सरकार का मुखिया होना।	6